

DPN 6799

शिवावली विधान SIVĀVALĪ VIDHĀNA

Title :

Run. No. 7524

Cat. No. 34

Micro. No.

Subject विधि Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 17.5 x 16.5

Folios 30

Lines (in a page) 13

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

→ कालीप्रसाद Kali Prasad.

Author / translator

Scribe / donor

बाबानानी बैद्य

Date: NS / SS / VS / KS 1989

Ruler / place

Baba Nani Baidya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Beg. ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ अथ शिवावली लिख्यते यथाक्रमेण ॥ चीथ
स्वाते पीठ देवता पूजा ॥

P.T.O.

Col. इति श्री शिवस्तोत्रं समाप्तम् ॥

इहं पोस्तवं मन्नापुर नगरे त्रिपक्ष रोल् धालेमाक्षे वाशिते वैद
कर्मिनीक वाली प्रसादेन लिखितं संपूर्णं समाप्तम् ॥

इति सम्बत् १९८९ साल मीति पौष वदी १२ पौष १० गते शेज
धते दीन पुन्डु चोयाव सिद्ध याहुन जुलो ॥

वर्ष ६९ या उमेरस चोया जुलो ॥

विनिश्चिवावलोविश्वानलि
विने संपूर्णः भुभं मल्लुस
दाः॥

श्री सा
श्री गणेश

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ शिवावरि लिख्यते
यथाक्रमेण ॥ पीथस्थाने पीथदेवता पूजा ॥ मूलयात्र
तरे पक्षे शिवाह पक्रीयते ॥ शिवादेवाग्रे स्थाप्य प्राणप्र
तिस्थापय ॥ शिवादयकेता पोतवाशन पाक्षाय ॥ वा
कुम्भात सुं माश सुं कोलो सुं मीथ सुं यावदुधपुप
कुम्भात्वासमिक्क मद्यत्रयेन दालाव ज्ञाय ॥ मैत्रहोर्हि
हूफदस्वाहा ॥ धमन्न दालाव ज्ञाय ॥ प्राणप्रतिष्ठा ॥
ध्यान ॥ बालार्क मण्डलाभाशा चतुर्विंशतिशोचना ॥
पाशगुरुश धरावाप धारयति शिवां भजे ॥ ॥ ध्याता
प्रणमते ॥ श्रीदक्षिणकाली शिवाह पदेवी ॥ इहागद २
इहातिष्ठ २ अत्रय निरुतो भव ॥ अत्राधिस्थानं कुह २
मम प्रजो गृहान ॥ प्राणप्रतिस्था ॥ अर्घ्योर्हि नमः ॥
ध्यातावाच ॥ ॥ धमन्न शिवादयके सं १ सं ७ सं ७

लसं ज्ञाय ॥ जपयाय धुनकाव सौत्रजुको मयास्यं ॥
शाशवीण वाधिलाव ॥ पोतवासन त्रिकोण सद्गोण
अष्टदल चोय ॥ स्ववात्रु वलिदयकाव स्थापणाया
य ॥ पद्ममांशन अलोग उपचारण भक्षभोज्यादि पू
जासमस्तदयके ॥ वलीयाह वले त्रिकोन चोयाव ॥
अर्घ्यपात्रतय ॥ शो धनमाला कोया उठाव ॥ मूलशा
धकन उत्र मुखेण प्राणाया मविधाय ॥ स्वकल्पात्र
लादिः सदङ्क न्याशं विधाय ॥ धनामूल देवतायाके
आशाकाय ॥ मूलदेवी श्रीदक्षिणकाली सद्गि स्थि
त्यत्र कारिणी ॥ अनुशादेहि मे देवी करिष्ये हं शिवा
वली ॥ अणु शिवा वलि विद्यथा सदा उठाव ॥ न्याशा
दि भूत भुक्ति आत्म पूजा तो याये ॥ धना इष्ट देवता

या ध्याए वाय ॥ त्रिधा अली कुके ताने आत्म पूजा तो
याय ॥ बलीश अशीता कुदि प्रभै रवा पूजा ॥ ॥ अ
क्षः अशीता कु भै रवाय पादुकी पूजयामी नम ॥ इक्षः
ह भै रवाय पादुकी पूजयामी नम ॥ इक्षः चणउ भै रवाय
पादुकी पूजयामी नम ॥ अक्षः क्रोध भै रवाय पादुकी
पूजयामी नम ॥ लक्षः उन्मत्त भै रवाय पादुकी पूजया
मी नम ॥ एक्षः कपालीश भै रवाय पादुकी पूजयामी नम
॥ ओक्षः भीमल भै रवाय पादुकी पूजयामी नम ॥ अक्षः ह
हार भै रवाय पादुकी पूजयामी नम ॥ ॥ इन्द्रादि दश
दिग्गज पूजा ॥ ॥ इहो इन्द्राय सुराधिपतये सायुधाय
शवाहनाय शपरिवाणाय शशक्तिकाय पादुकी पूजया
मी नम ॥ ॐ हं अग्नये स्पेजाधिपतये सायुधाय शवा

हनाय सपरिवाणाय शशक्तिकाय पादुकी पूजयामी नम ॥
ॐ मं यमाय प्रेताधिपतये सायुधाय शपरिवाणाय शशक्ति
काय पादुकी पूजयामी नम ॥ ॐ ईं नैमत्याय राक्षसाधि
पतये सायुधाय शवाहनाय शशक्तिकाय पादुकी पूज
यामी नम ॥ ॐ ईं वृहस्पत्याय जलाधिपतये सायुधाय शवाह
नाय शशक्तिकाय पादुकी पूजयामी नम ॥ ॐ युं वायुवेप
थताधिपतये सायुधाय शवाहनाय शपरिवाणाय शश
क्तिकाय पादुकी पूजयामी नम ॥ ॐ ईं कुवेराय धना
धिपतये सायुधाय शवाहनाय शपरिवाणाय शशक्ति
काय पादुकी पूजयामी नम ॥ ॐ हूं इशानाय प्रमथाधिप
तये सायुधाय शवाहनाय शपरिवाणाय शशक्तिकाय पा
दुकी पूजयामी नम ॥ ॐ ईं उर्ध्वाय स्वर्गाधिपतये सायुधा
य शपरिवाणाय शवाहनाय शशक्तिकाय पादुकी पूजया

मीनम ॥ ॐ ॐ शुशोपातालाधिपतये साधुधायशवाहन
 यशपरिवारयशशक्तिकायपादुकां पूजयामीनम ॥
 यताशिवयाध्यायय ॥ ॐ कालीकालीमहाकाली
 तजोमांशिवारुपिणीपशुपधरादेवीपरिवारगणै
 शरु ॥ ॥ एवध्याता आवाहयेत् ॥ स्वशक्तिनजीवन्मा
 शविदेतया शिववलीशतयेके ॥ यमन आवाहनमन्त्र
 वोउवाधोने ॥ आवाहनमन्त्र ॐ ऐं ह्रीं ह्रौं स्त्र्यै ह्रीं
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॥ श्रीदक्षिणाकालीके घोरावने
 महाकापालिनी ॥ विकटदंष्ट्रासंमोहिणी शोचिनी
 करालवदने मणोन्मादिनी ज्वालाभालिनी शिवारुपि
 णी भगवती आगच्छ ॥ मम सिद्धिं देहि ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा ॥ धर्म
 अस्वपोतवने ३ ॥ आवाहनयाय ॥ मूला ॥ ऐं ह्रीं श्रीं

स्त्र्यै ह्रीं शिवायै इहागच्छ २३ ह्रीं निदेहि ता भवत ॥ ह्रीं
 अक्षयं २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 यत ॥ आगतेश्वैव ह्रीं फट् नागताश्वैव क्षत्रिणितोड
 यं ॥ मूलमन्त्रदशवारमुच्चार्य ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं मूला
 शिवायै पादुकां समर्पयामीमम ॥ हस्तार्घ्यस्वाहा ॥ आन
 मणीयं स्वधा स्नानीयं वसट् पश्चात्तस्नानीयं ह्रीं अ
 लिस्नानीयं वौषट् गंधोदकस्नानीयं फट् वस्त्रेण प्रोक्ष
 येत् ॥ ह्रीं चन्दनं नमः दुर्वाक्षतस्वाहा रक्तचन्दनवसट्
 सिन्दूरय ह्रीं सुकजलेन वौषट् ॥ ह्रीं स्त्री ह्रीं अलंकारेण
 फट् ॥ धूपनमः दीपस्वाहा नैविद्यं वसट् फलाय ह्रीं
 मूलेन वलि ॥ पुनश्च मणीयं ह्रीं ॥ मूलेन विद्याभूति
 मूलेन वलि ॥ अङ्गुली नमः जयेत् ॥ अनुज्ञादेहि मे देवी
 परिवारार्घ्याय च ॥ मूलमुच्चार्य शोभायै पशुप

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं महामुद्रा नमः शान्ताय पादुकी पू
 जयामी नमः ॥ वायुय ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं भूतनाथ
 शान्ताय पादुकी पूजयामी नमः ॥ इशाने ॥ ऐं ह्रीं श्रीं
 ह्रौं पद्मवने शान्ताय पादुकी पूजयामी नमः ॥
 नेत्राय पश्चिम मध्ये प्रथम ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं भोगात्रक
 शान्ताय पादुकी पूजयामी नमः ॥ इशाने पूर्व मध्ये
 प्रथम ॥ ॥ इति शान्तात्रक पूजा ॥ ॥ अथ काली मंत्र
 ॥ शायाने साधकः श्रेष्ठः शिवावली मुपाहरेत् ॥ सर्व
 सफल सिध्येत् ॥ धर्मकामार्थ सिद्ध्यत् ॥ तथा श ॥
 केशरं वल्लिंदत्वा मत्स्यमांशेन सुन्दरी ॥ सा सर्व ध
 यदीपाभ्यां प्रातरेणित्तनेवरेण ॥ साधकेन्द्रावलिंदत्वा
 कालीकालीनिर्जयत् ॥ कल्पस्फोथवल्लिंदत्वा शेषा
 न्यादिशि संचरेत् ॥ कालीकालीतीवक्तव्यं तत्त्वमांशि

बहूपिणी ॥ आयाति सगरा हृष्टा वलिं भुक्ता भुसुधरी
 ॥ मुखमुत्पलपरेतीचत् तदा सिद्धि नशं सयेत् ॥ सका
 किनीयद्यायाती भुक्ते ऐनिससुधरी ॥ तदेव महती सिद्धि
 स्वकर्मनाशं सयः ॥ नायाति च न भुक्ते च न ऐती मद्र
 लुभं ॥ तदा विघ्न विना नीया शान्तिस्थसय नं चरेत् ॥ ना
 न्यथा सुखमहरीया सत्यसत्यं हि पार्वती ॥ ॥ शिवावली
 विय ॥ त्रिपुण्ड्रालि ३ ॥ ॥ ॐ अद्यादिवाक्य ॥ अमुक
 गोत्र ॥ अमुकदेवसम्प्रा ॥ अमुककामनया ॥ अमुक
 देवता प्रीत्यर्थं सखसामिषान्नवलि ॥ पशुहपाये शी
 गाये सायुधायै सवाहनायै ॥ सपरिवारायै स्वसखायै
 स्ववर्गायै ॥ श्रीमद्क्षिणकालिकायै इदं शिवावलि
 हंकीत्ये ॥ वलीशायिया वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ ह्रीं ह्रौं
 दक्षिणकालेः महाघोरा एवायै भगमातिरोषे शि

वाहपिण्ये ज्वाला मालिण्ये ॥ इमे वलिं स्वाप्यः
 पुण्ययापीत्याह ॥ त्रियाञ्जलि ॥ वलिदिय ॥ ऐ
 ह्रीं श्रीं स्फुरेत्सौ कोरुं कुरुं कनदीपमणोहरदेवी ॥ विलु
 क्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः ॥ वलिं गुरु ॥ स्वा
 हा ॥ ऐ ह्रीं श्रीं स्फुरेत्सौ खोखुं सिंह दीपक देवी ॥
 मृगसिंक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः ॥ वलिं ॥
 ऐ ह्रीं श्रीं स्फुरेत्सौ गौं गं गं स्वर्ण दीपः भुभकाभिदेवी ॥ च
 रि ॥ नाथ क्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः ॥
 वलिं ॥ ऐ ह्रीं श्रीं स्फुरेत्सौ धौ धुं धुं कर्ण दीपघनक
 रदेवी ॥ जक्षराजक्षत्रपालाय पादुकी पूजया
 मी नमः ॥ वलिं ॥ ऐ ह्रीं श्रीं स्फुरेत्सौ दुर्गा दुर्गा ॥ स्वा
 मुखदीपप्रभू देवी ॥ गणपतिक्षत्रपालाय पा
 दुकी पूजयामी नमः ॥ वलिं ॥ ऐ ह्रीं श्रीं स्फुरेत्

ह्रीं धौ धौ कर्ण दीपः चण्डदेवी ॥ महाशक्तिक्षत्र
 पालाय पादुकी पूजयामी नमः ॥ वलिं ॥ ऐ ह्रीं श्रीं
 स्फुरेत्सौ दुर्गा दुर्गा ॥ धौ धौ दियानदीपकाक्षत्रदेवी ॥ भगु
 क्षत्रपालाय पादुका पूजयामी नमः ॥ वलिं ॥ ऐ ह्रीं श्रीं
 स्फुरेत्सौ गौं गं गं जीर्ण दीपजालिनी देवी ॥ मृगसिं
 काक्षत्रपालाय पादुका पूजयामी नमः ॥ वलिं ॥ ऐ
 ह्रीं श्रीं स्फुरेत्सौ कोरुं कुरुं एकपाददीपः भुभद्रा देवी
 ॥ चित्राक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः ॥
 ॥ वलिं ॥ ऐ ह्रीं श्रीं स्फुरेत्सौ गौं गं गं प्रदीपभुभद्रा
 देवी ॥ धौ धौ क्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः ॥
 ॥ वलिं ॥ ऐ ह्रीं श्रीं स्फुरेत्सौ दुर्गा दुर्गा ॥ पुष्करदीपमृगा देवी
 जयभद्रक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः ॥

॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ शाल्मली द्वीप चो मणी
 देवी ॥ वसत्रक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः ॥ व
 लिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ विनदे थ द्वीप चञ्चला
 देवी ॥ तिथीयक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी
 नमः ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ कुमार द्वीप जम
 दंष्ट्रा देवी ॥ कुलाक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी
 नमः ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ यव द्वीप चला
 देवी ॥ जमदग्निक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः
 ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ पुष्कर द्वीप दस्तु ए दे
 वी ॥ सुधीपालक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः
 ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ कटहर द्वीप द
 क्षा देवी ॥ महाकांक्षक्षत्रपा^{लाय} पादुकी पूजयामी
 लायपा

नमः ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ चन्द्र द्वीप
 म्रुचुना देवी ॥ महानाथक्षत्रपालाय पादुकी पूज
 यामी नमः ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ जन द्वी
 प भीमराम्या देवी ॥ भुविक्षत्रपालाय पादुकी पूज
 यामी नमः ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ ज्वाला
 पूर द्वीप काला देवी ॥ गोपालक्षत्रपालाय पादुकी
 पूजयामी नमः ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ रत्न
 द्वीप धर्मा देवी ॥ महाकालक्षत्रपालाय पादुकी पू
 जयामी नमः ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥ सु
 द्वीप सुमंगा देवी ॥ पद्माक्षत्रपालाय पादुकी पू
 जयामी नमः ॥ वलिं ॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं द्रौं द्रुं ॥
 गामेक्ष द्वीप रत्ना देवी ॥ धनदक्षत्रपालाय पादुकी

कोपूजयामीनमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
गभादीपकहोदेवी॥ विपुलाक्षत्रपालायपादुकी
पूजयामीनमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
दीपमणोमणोदेवी॥ महानन्दक्षत्रपालायपा
पूजयामीनमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं यौ यौ यौ
शवदीपहयवेगदेवी॥ भूकक्षत्रपालायपादुकी
पूजयामीनमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
क्षत्रीदेवी॥ विहाक्षत्रपालायपादुकीपूज
मः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
वादेवी॥ महाजमक्षत्रपालायपादुकीपूजयामीन
मः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
देवी॥ भूभगाक्षत्रपालायपादुकीपूजयामी

नमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
वादेवी॥ कामक्षत्रपालायपादुकीपूजयामीन
मः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
गादेवी॥ वक्षत्रपालायपादुकीपूजयामीनमः
॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
वीदेवी॥ देवेश्वरक्षत्रपालायपादुकीपूजयामीनमः॥ वलिं
॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
॥ विदारक्षत्रपालायपादुकीपूजयामीनमः॥ व
लिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
मीदेवी॥ शास्त्रिवाक्षत्रपालायपादुकीपूजयामी
नमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं भूँ भूँ
नतदेवी॥ मातङ्गक्षत्रपालायपादुकीपूजयामी

नमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं इं डीं प्रक्षपक्षीपक्ष
 रीदेवी॥ ब्रह्मक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः॥
 वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं इं डीं कलक्षीपदुदयदेवी॥ ऐं
 ज्ञाक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः॥ वलिं॥ ऐं
 ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं मं मं वक्रक्षीपक्षदा तदेवी॥ अष्ट
 मालक्षत्रपालाय पादुकी पूजयामी नमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं
 श्रीं ह्रीं ऐं लं लं शाकक्षीपः लकादेवी॥ अष्टमालक्षत्र
 पालाय पादुकी पूजयामी नमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं
 ह्रीं ऐं ऐं शातलीक्षीपक्षदृष्टादेवी॥ एकपादक्षत्र
 पालाय पादुकी पूजयामी नमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं
 ह्रीं ऐं श्रीं पुष्करक्षीपदोपलीदेवी॥ नारिहक्षत्र
 पालाय पादुकी पूजयामी नमः॥ वलिं॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं

ह्रीं अं अं इडाक्षीपक्षदेवी॥ लोकालोकक्षत्रपालाय
 यपादुकी पूजयामी नमः॥ वलिं॥ इतिषीठपूजाव
 लिं॥ श्रीचक्रमेहन्याशा॥ ब्रह्मरक्षुपूजाविद्यायां मु
 चार्य॥ श्रीपद्मामागतिपुरसोदर्यभट्टारिकाय॥ स
 र्वसिद्धिमयचक्रक्षीपादुकी॥ पूजयामीः तर्पयामी
 नमः॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं नादाते॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं
 ऐं ऐं देवसर्वात्मनमयचक्राय नमः॥ नादे॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं
 ह्रीं ऐं अं चन्द्रकला॥ सर्वसिद्धिप्रदायकचक्राय नमः॥
 भूमयो॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं सर्वगणहारचक्राय न
 मः॥ कले॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं सर्वरक्षाकरच
 क्राय नमः॥ रुद्राय॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं ह्रीं सर्वार्थसा
 धकचक्राय नमः॥ नमो॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ऐं

हे सर्वसौ भाग्यदायक चक्रायनमः॥ लिङ्गे॥ हे श्रीं श्रीं
 स्फुं ह्रौं कं सर्वसंक्षोभनचक्रायनमः॥ मूले॥ ॐ श्रीं
 श्रीं स्फुं ह्रौं इं सर्वशापरकचक्रायनमः॥ पादयो॥ ॐ
 श्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं लं त्रैलोक्यमोहनचक्रायनमः॥ श्रीचक्र
 सयदेहनुचेतनेदेयताशयः॥ ॐ हे श्रीं श्रीं स्फुं ह्रौं
 लुं सर्वाङ्गे विन्यसेत्॥ इति चक्रमहान्यासः॥ ॐ श्रीं
 लं ह्रूं दक्षिणकाले महाद्यौरुवायै भगमालि
 रोये शिवायै रोये॥ ॥ कालामालि रोये इमं वलिप्रय
 दामि वलिगंधू २ रयादय २ मम सिद्धिं कुह २ मम श
 न्नु २ आसय २ मारय २ संभय २ ३ आदय २ हन २ वि
 ध्वंशय २ विद्रावय २ पच २ दि न्धि २ शोषय २ त्रा
 शय २ वृतय २ मोहय २ उन्मूलय २ भस्मि कुह २

ॐ भय २ स्फोटय २ मथ २ विद्रावय २ हन २ विशो
 भय २ त २ स्तभय २ दम २ मर्दय २ पातय २ सर्वभूत
 वशं करी सर्वजनमोहनी ॥ सर्वशत्रुक्षय करी २ ज्व
 ल २ प्रज्वल २ शिवाक्षयधरे काली महाकापालिनी ॥
 ह्रीं ह्रीं हूं हूं हौं हौं ह्रूं ह्रूं ह्रौं ह्रौं ह्रूं ह्रूं ह्रौं ह्रौं
 हिली २ ॥ मम सर्वाभिष्ट परये २ ॥ संहारिणी संमो
 हिनी कुंकुलो किलि २ हूं हूं फट् स्वाहा ॥ ॥ इति नि
 म्वायां यलिमुत्सजेत् ॥ आशुजप ॥ स्त्रियं स्त्रियं स्वा
 हा ॥ ॥ जपस्मर्याणं सोत्रयाय ॥ ॐ हूं काली कुंकु
 ली कौंकौं कुंकुं काली काली महाकाली ॥ तत्रोमाशि
 वहिनी यशु ॥ मपधरा देवी परिवार गणैः महः इ
 हा गच्छ २ स्वाहा ॥ ध्वते धूनकावमलसमारकोयाय ॥

धनं लिख क्रयाय ॥ मालको धुनका वहुपा देव वि
शर्जणाय ॥ धनं लिखि वा विशर्जणाय ॥ थु
गुलिवली जो उवा देव पि वने वाने ॥ धमनयाय था
यश शिवा वलि वी ल वाने ॥ विल्व मूले वा ॥ इम शरणे वा ॥
पीथ स्थाने वा ॥ चतुस्य थे वा ॥ मदीतिरे वा ॥ सुन्म स्था
णे वा ॥ यथा विद्वि वलिंद द्यात् ॥ एवं सुत्वा दिष्ट म
नुस्स भाजनं ॥ यत्त भूमेणि वरेण ॥ ततो एव वे वं ग
ह मागत्य ॥ गंध पुष्प द्यौ देवा पूजयत् ॥ तदुक्तं कु ल
पूजा मणो नित्य श्राद्ध तथा ॥ संध्या वंधनं पि नृ पूजनं
॥ तथैव कु ल स्थाणं ॥ नित्य ता कु ल पूजनं ॥ जप पूजा
विधाना नियत्कि श्चित्फल कृता निच ॥ गृहिता सोम
मादाय शिवारोदन निर्जणे ॥ यकया भूर्यते देवी शि

वाया मधु पार्वती ॥ तत्रैव सर्व शक्ति नी प्रीति पाम
दुसुभा ॥ राजादि भय माप न दे शा त्तर हया दिके ॥
शुभा शुभा णि कर्माणि ॥ विचि त्रे व शि माहरेत् ॥
यवं शा त्ता महा देवी ॥ शान्ति स्वस्ति यनं वरेत् ॥ दि
ति श्री कु ल पूजा मणो ॥ शिवा वलि विधि ॥ ई
शान स्वस्ति नरा सा ॥ सिद्धि महा ला भजयु ॥ पूर्व
स्वस्ति नरा सा रोग जयु ॥ अग्ने य स्वस्ति नरा सा
म त्पूजयु ॥ दक्षिण स्वस्ति नरा सा ॥ स्वामी हानि ॥
नेत्र मय स्वस्ति नरा सा घाल दयु ॥ पश्चिम स्वस्ति न
रा सा योग हानी ॥ वायु ये स्वस्ति नरा सा ॥ भोग
हाण जयु ॥ उत्तरे स्वस्ति नरा सा ॥ पुनर्व दन सि
द्धि जयु ॥ ध्वजे न वया ला क्षणा ॥ ॥ ॐ नमः शि

वाय ॥ शिवारूपधरे देवी कामकाली नमोस्तुते ॥ ३ ॥
कामरूपी लज्जिङ्गे घोरावेष्ट कुलसिनी ॥ ४ ॥ इमं शा
नैवाशिनी प्रेतेशवमांशप्रियनद्ये ॥ अरुण्येवासिनी
शिवे फेरजन्म कर्माणि ॥ ५ ॥ नमस्तुते महामाये ज
गतारिणी कालिके ॥ मातङ्गी कुर्कुटे रोद्रे कालिका
नमोस्तुते ॥ ६ ॥ सर्वसिद्धिप्रदहीमे भयं करि भया
पहे ॥ प्रशान्नाभवदेहीमे भयं करि भयापहे ॥ प्र
शान्नाभवदेवेशी मम भक्तस्य कालिके ॥ ७ ॥ सीता
रत्नारिणी जय जय सर्वभुभं करि ॥ विभूषयि
कृते चण्डे चामुण्डा मुण्डप्रतिष्ठा ॥ ८ ॥ संहार
कारिणी कुद्रे सर्वसिद्धिप्रयदमे ॥ दुर्गा किण
टिसर्वप्रिया शनगते भवे ॥ ९ ॥ अतुग्रहं कुरु सदा

कृपया मो विलोकय ॥ एज्यप्रयेद्विकटे वितमायु
शमा तन्वीये ॥ १० ॥ शिवावसि विधानेन प्रशान्नाभव
भैरव ॥ नमस्तेस्तु नमस्तेस्तु नमस्तेस्तु नमो नम ॥
॥ ११ ॥ ॥ इति श्री महाकालसंहितायां शिवास्तो
त्रसमापतम् ॥ ॥ भुभम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
अथ कालिका कवचं ॥ तथा च भैरवतन्त्रे ॥ श्री भैरव उ
वाच ॥ काली पूजाभुतानाथ भावश्च विविधाप्रभो ॥ इ
दमिं श्रोतुमिदमि कवचं सर्वभूयितं ॥ त्वमेव कारण
नाथा त्राहि मां दुःखशंकटात् ॥ श्री भैरवोवाच ॥ र
हस्यं शृणु वक्षामि भैरवी प्राणवल्लभ ॥ श्री जगन्म
होनाम कवचं मन्त्रविग्रहं ॥ पथित्वा धारयित्वा च
त्रैलोक्यं मोहय कुनात् ॥ नाण्यरोपिये इत्याना

रीभूत्वा महेश्वरी ॥ योगीशो भोगाण्ये च दत्त्वा
चरणद्वहः ॥ चरणौ जघनैव एवणादिणिशा
चात ॥ यस्य प्रसादादिशो वित्रैलोक्य विजयीपु
त्र ॥ धनाधीनः कुवेरोपि सुरेशो भुङ्क्षीपति ॥ स
वंहिसकला देवाः सर्वसिद्धिश्चाः प्रिये ॥ श्रीजग
न्मंगलास्थास्य कवचस्य क्रमः शिव ॥ इन्द्रेनुषु
वताच कालिकादक्षिणोरिता ॥ जगतो मोहने दुष्टवि
जयिभुक्तिमुक्तिषु ॥ योषिदाकर्षणे येव विनियो
गप्रकीर्तित ॥ ॥ अं शिरो मे कालिकापातु ॥ श्रीं का
लेकाक्षरीपातु ॥ श्रीं श्रीं श्रीं मेललाते च कालिका
खड्गधारिणी ॥ हुं हुं पातु मे वयुग्मे ॥ श्रीं श्रीं पातु
भुतीममः ॥ दक्षिणे कालिकापातु प्राणयुग्मे महे

श्वरी ॥ श्रीं श्रीं श्रीं रसचापातु हुं हुं पातु कपोलक ॥
सकलवदनापातु श्रीं श्रीं स्वाहा स्वर्गपिणी ॥ द्वाविंश
त्यक्षरीस्वः श्वो महाविद्याविद्यापुदा ॥ खड्गमुद्रधार
काली सर्वाङ्गमपितो वतु ॥ श्रीं श्रीं हुं मक्षरीविद्या
चामुण्डा हृदयं ममः ॥ हुं हुं अं ऐं सततं हुं हुं फट् स्वाहा क
कुस्थले ॥ मक्षरीमहाविद्या भुजीपातु सकलका ॥ श्रीं
श्रीं हुं हुं श्रीं श्रीं करो पातु चरुक्षरीममः ॥ श्रीं नाभि मध्यं द
संचदक्षिणे कालिके वदु श्रीं श्रीं दक्षिणे कालिके हुं हुं पा
तु कटि द्वयं ॥ काली दशाक्षरीविद्या स्वाहा ते चामुण्ड
कै ॥ अं हुं हुं स्वाहा मे नानुती कालिका सदा ॥ कालिह
नामविद्यायां चतुर्वर्ग फलपुदा ॥ श्रीं हुं हुं पातु सा
गुह्य दक्षिणे कालिके वतु ॥ श्रीं हुं हुं स्वाहा पदपातु

चतुर्दशाक्षरी ममः॥ खड्ग मुण्डाधरा कालि वरदा भ
 यधारिणीः॥ विद्याभिः सकलाभिसा सद्गुरुः मभि
 नोवतु॥ कालीकपातिकुलसकलकुलाधिरोधनी॥ वि
 प्रचित्रातथोग्राव प्रभादिप्राद्यनविद्य॥ नीलोघना
 चलाकाच मात्रामुत्राभिनाचरमा॥ एताः सर्वाः खड्ग
 करमुण्डमालाविभूषणा॥ रक्षंगुह्यायुधैर्दिशुवा
 ह्मीनारायणीतथा॥ माहेश्वरी च चामुण्डा कोमारि
 चायराजिता॥ वाराहीनारसिंहा च सर्वाः श्रायुधभू
 षणाः॥ रक्षंगुह्यायुधैर्दिशु माहेश्वरीदिशुयतस्तथा॥ २२॥
 कतिंतेकतंदिशु कवचं परमाद्भुतं॥ श्रीजगन्मंगलं ना
 म कवचं समुत्तमोदितं॥ गुरुपूजां विधायार्थविधि
 यत्प्रपठेत्ततः॥ कवचं त्रिःसकलपि यावत्शाणं च वापु

नः॥ एतद्गताधरा हत्य त्रैलोक्यविजयी भवेत्॥ त्रैलोक्यं
 क्षोभयेत्येककवचस्य प्रसादतः महावाणी भवेन्मासाः तस्य
 वृत्तिर्भवेत् भवेत्॥ पुण्यांजलिं कालिकायै मूले नैव प
 ठेत्सकल॥ सततं सर्वसहस्राणि पूजाया कलमा पुयात्॥
 भूर्यर्चितं लिखितं चैतत्सोर्गस्थं धारयद्यदि॥ शिखायां
 दक्षिणे बाहौ करोष्ठवाधारेण दुध॥ त्रैलोक्यं मोहयत्कोपा
 तं त्रैलोक्यं पूर्ययक्षणात्॥ पुत्रयान् धनवान् श्रीवान् नाना
 विधानिधिर्भवेत्॥ वृक्षाद्यादिमितास्त्राणि तद्वा त्रस्य शिना
 ततः॥ तस्य मयीति या नारि वंध्या वामतपुत्रिणी॥ कंठे वा
 वामवाहो वा कवचस्यास्य धारणात्॥ वरुणस्य जीवद
 त्सा भवते च न सीदयः॥ नंदरी पराशिष्यभ्यो स्वशिष्यपि
 विज्ञेयतः॥ शिष्यभ्यो भक्ति युक्तेभ्यो श्राम्य धामतु माहपु

याते ॥ **सुधा** मुद्रिद्वयकला वागे देवी मंदिरे मुखे ॥ **पौ**
 त्राणां स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितं ॥ इदं कवच
 मज्ञात्वा योजयेत् कारिदक्षिणात् ॥ शतलक्षपुत्रप्रा
 पितस्त्यविद्या न सिध्येति ॥ सशस्त्रा घातमाप्नोति शो
 चिरान्मृत्युमाप्नुयात् ॥ जपेदादौ जयेदत्रे सप्तवारं न्यनु
 मात् ॥ नौ च तस्य त्रकुत्रापि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ लि
 खित्वा स्वर्णपात्रे वै पूजा काले तु साधके ॥ मुद्रिधार्य
 प्रयत्नेन विद्या अभं प्रपूजयत् ॥ ३६ ॥ इति श्री भैरव तंत्रे
 श्री काली कल्पे श्री मत्तदक्षिणा कारिकाया श्री जग
 न्मंगल नाम कवचं संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 तत्रैव ॥ श्री उक्ता मकला गुह्य काले नमः ॥ ॥ श्री दे
 वुवाच ॥ बोद्धव्या संश्रुत तत्ते प्रहसिद्धि महा फलः ॥

यत्नेन विधुताश्चापि महा भक्ति प्रदानया ॥ त्रैलोक्य मो
 हनं नाम कवचं मेधुनावद ॥ कवचत्वेन ये देवी शिवयो
 गां स्वयमुदाः ॥ यत्तत्कीदृशं हि भवितव्यं कौतुहलं मम
 ॥ यदि प्रशन्नोऽस्मि मयि लोके वदशो दत्तः ॥ सर्वस्यादधि
 कयेत स्वयैव सप्तमदा हतं ॥ नित्यं मामुश्च सितं च जा
 नोमम तग्रह ॥ ॥ श्री महादेव उवाच ॥ ममेव दोषो दे
 वे शिः महं से नानुरय हो ॥ यत्पुर्वं ते वपुरतः सप्तमदा
 भिधा कृता ॥ नायेति मर्थं मया श्री रतो निन्दे स्वमा
 त्मना ॥ मम चे तस्य भूदित्यर्थः स्वयिदं विस्मृतं भवेत् ॥
 न स्मृतं न मुक्तं गुप्तं ॥ सुयो हिति भुक्ति प्रथा ॥ त्वं हि स
 वेति मास्तीति कथं नैव स्मरिष्यसि ॥ अतः परं मि
 दं गोप्यं प्रयागोप्यं कथं भवेत् ॥ इति एव च भवशीः

कथमात्मलीगोपणं ॥ तस्मात्तवपुवक्षामी नोचे ह
क्षसिमावधं ॥ अधां भक्ति तवप्रेक्ष विवर्ष्या मम ज
यते तेनैव तादृशाः काश्चित् सिद्धयः सन्निभृतले ॥ त्रैलोक्य
क्यमोहनेधीते यानैवस्यः करे स्थिताः ॥ पुनरेकं मया
प्राप्य मानं देवी निशा मयः कर्मा नृपं जन्म स्यादे
हो जन्मणि जन्मनि ॥ देहे देहे तथा प्राणा स तथा सर्वे
स्थानिक ॥ तेषु ते सुधनं राज्ञं भोगारत्नं सिद्धयोग है ॥
सर्वनास्यसुरभं ननु त्रैलोक्यमोहने ॥ विशेदियि
बुल्लं कदाच ॥ सर्वसं ददतामपि ॥ राज्ञं देयः सिद्धयः
प्राणा नुप धो कयतामपि ॥ सर्वथा देवि नारव्येयं
त्रिसर्गं ते वीर्यं ॥ सिध्यस्य सिद्धिः कथिते गु
रे सुभाण भवत् ॥ समासा दुपदेशोयं मया ते स

मुदिरित ॥ मत्पुण्यममस्मान् उपदेशमि सुव्रते ॥ लो
भादयेयं प्रदद्यु मत्पुवक्तं विज्ञातिते ॥ उपदेशं विनाय
चे त्रैलोक्या कर्षणस्य हि ॥ त्रैलोक्यमोहने नाम पथं
तिकवचत्विदं ॥ सद्यते मरणं यातिः भक्षिता जोगिणी
गते ॥ उपदिक्षामितस्मात्कां वध्यनामं जलिः सदा ॥
सावधाना स्थिर भुक्ता गदनानुगदस्वमे ॥ त्रैलोक्यमो
हने स्यास्य कवचस्य मे भूय ॥ त्रिपुराणि मयिः प्रो
क्ता विरात दनु उदीरिते ॥ देवी भगवति काम कलाका
ली प्रकीर्तिता ॥ २० ॥ कुंवी जंवी जमुदिसं कामार्णवी
लकंतथा ॥ योगिणी शक्तिरुद्दिष्टा दकिनी तस्य प्र
च्यते ॥ विनियोगस्य कथितः पुहसार्थचतुष्टये ॥ दे
वी काम कला काली प्रीति ये च विदो सतः ॥ सनुक्ष

तत्रैलोकावशकृत्तनुः॥ येन चतुष्टयं देवी संसारे स्व
 तिदुःखं॥ प्रसादात्कवचस्यास्य केसिद्धिर्नैव लेभिरे
 ॥ सम्वर्त्ताद्याश्च मयया महताया महोभुजः॥ विशेषत
 सुभरतो लङ्कवान्यद् एषु तत्॥ जाह्नवीजमुनारे वा
 कावेरीगोमती स्वयं॥ सहस्रमस्वमेधाना मेकै वात्राज
 हारिः॥ याजपित्रे मातृपित्रे त्वेकै कस्मिन्महा कृतौ॥
 सहस्रं पत्रपद्मानां कण्ठायादात्सभर्मणां॥ सप्रदीप
 वतिं पृथ्वीजीगायत्रीदिने नयः॥ नवायुतं च वर्याणां ये
 ॥ जीवपृथिवीपतिः॥ अद्याहतरथाध्यायः स्वर्गापाता
 लमीश्वरान्॥ एतमन्योपि फलवानतस्यैव प्रसादात्
 भक्तिश्रद्धायायाते मयोन्नपामेभ्यः॥ प्राणतैयैपि
 गोवाचः त्वयान्यस्यैकदा चतः॥ देवतात्रिपुरघ्रात स

मां प्रादादहं तथा॥ तुभ्यं सम्वर्त्तमयये प्रादासत्यं वृषीमि
 ते॥ सम्वर्त्तादास्यति प्रीतो देवीदुर्वाशसत्विमां॥ दत्तात्र
 याय स पुनारेवं लोके प्रतिष्ठितः॥ चक्राणां कोटिभिर्देवी
 वर्याणां पिकोटिभिः॥ माहिमावर्णितु सकयः कवचस्या
 स्य नो मया॥ पुनर्वृषीमि ते सत्यं मणोदत्तानि शामयः॥
 इदं न सिद्ध्यते देवी त्रैलोक्या कर्षणं विना॥ ग्रहि त्रेतुष्य
 ते देवी दात्रे कृप्यति तत्क्षणात्॥ एतत्ज्ञात्वा यथा कर्तुं
 मुच्यते तत्करिष्यामि॥ ६५५॥ इति श्री कर्मकराग्रहक
 लीकवचं संपूर्णः॥ अथ सोऽध्यायाः॥ विना न्याशे
 न देवेशि यो मन्त्रं जपते सदा॥ स सर्वान् नृनि स्फुल्लं तं य
 वधिरेकं जपयत्॥ ततो न्याशमारभेत्॥ प्रथमं षड्
 ति न्यासः॥ ऐं ह्रीं श्रीं स्फुल्लं तं त्र्यं कालिकादिनां म

हाकालि. ह्रीं मां शशिनितभोजनी ॥ हूं रक्तकृष्णमुखी
देवी. ह्रीं मां मापेस्पभुशजवः ॥ श्री हृदये पूति ॥ कालि
कादेवी श्रीपादुकां ॥ ऐं ५ ऐं नमो भगवति दुस्रचाण्डा
लिनी. शत्रुहृष्टिमांसभक्षणी. कपालखट्टाकुधारिणी
हन२दह२वम२पच२ हूं ३ मुमुक्षुमारय२ ग्रस२ ह्रीं ह्रीं
हूं हूं फट् स्वाहा ॥ ॐ दुस्रचाण्डालिनी शिखास्थानपादुकां
॥ ऐं ५ ह्रीं अघोरे. ह्रीं अघोरे स्वेष्टे घोरे घोरे तो. ह्रीं ह्रीं हूं
सर्वतः सर्व सर्व स्वेष्टे नमस्ते हृदये हृदये ह्रीं शिखास्था
ने श्री शिखास्थदन्द् श्रीपादुकां ॥ ऐं ५ ह्रीं उन्नोरिया
लिमदिगा. ह्रीं सहस्रहृदयविषयधिया ह्रीं दिलियादुल
खिया. ह्रीं सर्वदृढलिखिया. श्री भैरविकाकवच
स्थानेपादुकां ॥ ऐं ५ हूं गुह्यकुपिके हूं फट् ह्रीं रक्ते

महारक्षचामुण्डेश्वरी ऐं हं स्वाहा ॥ रक्तचामुण्डा. नेत्र
स्थानेपादुकां ॥ ऐं ५ हूं हूं हूं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वोपद्रवान
यन्त्रमन्त्रपूर्णप्रयोगादिकं येन कर्तव्यं ते करिष्य
मितान्. सर्वानहन२दह२कएल. ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं गुह्य
कुपिके अमुद्रागुह्यकुपिका. श्रीपादुकां ॥ इति उ
ग्रघट्टकं ॥ अथ वरदाकिनी न्याशः ॥ ऐं ५ दौं डौं डुं
दाकिनी मां रक्ष२ मम स्वधातु. दुक्ष२ सर्वशत्रुवशं
रि श्रीपादुकी ॥ ग्रीवायां ॥ ऐं ५ ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं दाकिनी मां र
क्ष२ मम रक्तधातु न रक्ष२ सर्वशत्रुवशं करि श्री
पादुकां ॥ हृदि ॥ ऐं ५ ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं दाकिनी मां रक्ष२
मम मांसधातु न रक्ष२ सर्वशत्रुवशं करि श्रीपादुकां
॥ नाभौ ॥ ऐं ५ ह्रीं ह्रीं ह्रीं दाकिनी मां रक्ष२ मम

मेदी धातुन रक्षर सर्व सत्व वशं करि श्री पादुकी ॥
 ॥ लिङ्गे ॥ ऐं प साँ सी सँ स्म साँ किनी मां रक्षर म
 म सु सी धातुन रक्षर सर्व सत्व वशं करि श्री
 पादुकां ॥ गुं डे ॥ ऐं प हाँ हीं हँ स्म हाँ किनी मां रक्षर
 म म म गी धातुन रक्षर सर्व सत्व वशं करि श्री
 पादुकां ॥ भू म ध्ये ॥ ऐं प याँ यीयँ य्युँ याँ किनी मां
 रक्षर म म भू धातुन रक्षर सर्व सत्व वशं करि
 श्री पादुकी ॥ सह सु द ल वं हं रं व स ॥ ततो अ
 तमा तका न्यास ॥ ऐं प प्र यागं क्षत्रं अं अ शीता
 कुं भै रव अं पुष्पा ली देवी पादुकी ॥ सार शी ॥
 ऐं प वा ए न शी क्षत्रे कं हूँ भै रव कां मां हे श्री पादुकी
 ॥ वदने ॥ ऐं प को हा गी र क्षत्रे चं च रत भै रव चो को

मारी श्री पादुकी ॥ कर्णे ॥ ऐं प अट्ट हाडा क्षत्रे टं क्रोध भै
 रव रां नारायणी श्री पादुकां ॥ हृदये ॥ ऐं प जय त्रि क्षत्रे
 तं उ न्न त भै रव तां वा ए हि श्री पादुकां ॥ नाभौ ॥ ऐं प चीर
 अक्षत्रे चं कपाली स भै रव पां शक्रा ली श्री पादुकी ॥ स्वा
 धिं स्थाने ॥ ऐं प एका मुक्षत्रं यं भीष्म ल भै रव पां चा मु
 ण्डा श्री पादुकी ॥ आधारे ॥ ऐं प देवी को र क्षत्रे शं संहार
 भै रव शं माहा लक्ष्मी श्री पादुकी ॥ पादयो ॥ ॥ इति अ
 तमा तका न्यास ॥ ॥ स्तुति ॥ निहृ दा सेन सम्पत्ता ॥
 आ मूल देव्या रूपे न वल्ल भाव स क्षमं विष्णु भाव परे
 ण हृद भाव परिकल्पयेत् ॥ इत्या मना मूर्ति हृत्या चै
 तस्या परमात्मा ण के ता ती सकुम्भ के न हृदि नि योज्ये ॥
 वो धा म्या ई कुर्यात् ॥ तडा दो ॥ श्री श्री श्री वीर नाथ

पाद॥ वृक्षरंधे॥ श्रीं श्रीं महा लक्ष्मीं शुभापाद॥ विन्दु
 देशे॥ श्रीं श्रीं वामनामेश्वरीं शुभापाद॥ वामनेत्रे॥
 श्रीं श्रीं सचरीं शुभापाद॥ वामनाशा पुत्रे॥ श्रीं श्रीं दिव्य
 शुभापादचक्रे॥ श्रीं श्रीं गोचरीं शुभापाद॥ दक्ष
 नाशे॥ श्रीं श्रीं भूचरीं शुभापाद॥ दक्षगोत्रे॥ इति
 प्रथमो वामक्रमः॥ अथ स्थूलं न्याशः॥ श्रीं श्रीं
 स्वहृदि॥ श्रीं श्रीं कैंकरे॥ श्रीं श्रीं लंतालु॥ श्रीं श्रीं
 सेंद्रुवो॥ श्रीं श्रीं मंदकूशे स्वे॥ इति वामपंचकः॥
 रथे भूमये॥ रथे नमः सर्वसिद्धियोगिनीभ्यः॥ क
 र्णे॥ रथे सर्वसिद्धिमातृभ्यो॥ हृदये॥ नमो नित्यो
 दिता नन्दिताये॥ नाभौ॥ सकलकुलचक्रनायि
 काये॥ गुह्ये॥ भगवति चण्डिकाया लिन्यै॥ गुह्ये॥

तेनाभौ॥ घृहृदि॥ थां द्वादशाक्ष॥ प्रथममातृ च
 र्णे॥ रथे वृक्षस्थाने॥ श्रीं वामनेत्रे॥ हृदक्षगोत्रे॥
 हां वामनेत्रे॥ कैंदक्षगोत्रे॥ श्रीं वामनाशा पुत्रे॥ नैव
 के॥ मः शिखाशी॥ आर्द्रा यो दिनी यत्वरणे॥ रथे प
 रमहंशिनी॥ वृक्षरंधे॥ निर्वासा मार्गदे॥ नाशाग्रे॥
 विषमोपत्यवप्रशमणि॥ तैलौ॥ सकलदुरितारिण
 केशदलनी॥ हने॥ सर्वोद्यमाभ्यो धितरणी॥ क
 र्णे॥ सकलसन्नुप्रशमणि॥ वक्षशि॥ देवीं शुभागद
 ॥ हृदये॥ हसहस॥ नाभौ॥ वत्सावत्सा॥ हृदये॥
 नाहृदि एभ्रवशाभक्षणि॥ कन्दे॥ ममस्य शत्रुम
 र्दमर्द॥ त्रिपथे॥ रवाहिरवाहिभगे॥ त्रिशूलो न भि
 दिभिन्दि॥ शययो॥ दिन्धिदिन्धि॥ गुह्ये॥ खड्गेन

तादयेतादये ॥ पादयो ॥ श्वेदय श्वेदय ॥ पादाङ्गु
 यो ॥ इत्याधारो दशके ॥ तावद्यान्मम सकल मनो
 रथान्साधय ॥ पादयो ॥ परमकाङ्क्षिके ॥ जामो ॥
 भगवति महाभैरवपधारीणी ॥ कुर्वो ॥ त्रिदशवारुण
 मिते ॥ गृहे ॥ सकलामन्त्रमाते ॥ नाभौ ॥ पुणवत्स
 ले ॥ हृदि ॥ देवीमाहाकाली ॥ करोठ कृये ॥ कालनाशि
 नी ॥ वक्त्रे ॥ हूँ हूँ हूँ प्रसादमदनांतु ॥ शोभो ॥ कुरु कुरु ॥
 नेत्रे ॥ सुरसुराकंठ्यका ॥ शिरः ॥ इतिग्रन्थि द्वादशके ॥
 श्रीवत्सरन्ध्रे ॥ श्रीविन्दो ॥ हूँ वक्त्रे ॥ फट् हृदि ॥ स्वाशिरु ॥
 हागुदे ॥ इति दन्दक्रमेन नवाक्षरं न्याश ॥ ३ ॥ ऐं नमः स
 र्वसिद्धियोगिनीभ्यो ॥ दुर्द्ध वक्रनाथ पादुकी ॥ ऐं न
 मः सर्वसिद्धिमातृभ्यो ॥ पूर्ववक्त्रनाथ पादुकी ॥ ऐं

नमो निम्पातन्दन निताये दक्षिणनाथ वक्रपादुकी ॥
 ऐं सकलकुलवक्रनाथिकाये उचवक्रनाथ पादु
 कां ॥ ऐं भगवत्यै चाण्डिकाया लिन्यै पश्चिमवक्रना
 थ पादुकी ॥ इति पंचवक्रन्याशः ॥ ऐं परमहंसिनी
 सर्वज्ञाता शक्ति हृदयनाथ श्री ॥ ऐं विष्णो पद्मव
 प्रशमणि अण्णादिवोचिता शक्ति शिरःनाथ श्री ॥ ऐं
 सकल इतिगिरि रत्नेशदलानि स्वतन्त्रशक्तिकवचना
 थ श्री ॥ ऐं सर्वोपदाभो धितरणी अलपता शक्ति ने
 वनाथ श्री ॥ ऐं सकलशत्रुप्रमथनी अतन्त्रशक्तिनाथ
 श्री ॥ ॥ इति षडङ्गन्याशः ॥ देवी अगद्वरदना
 थ श्री ॥ हसरश्चभयनाथ श्री ॥ मणिवंधे ॥ वलारक
 लसनाथ पाद ॥ वामसन्धौ ॥ नाहृथिए त्रवशाभ

क्षणी॥ कपालनाथपाद॥ वामबाहौ॥ ममस्वशत्रुम
 र्दमद॥ वदुनाथपादस्थाने॥ खाहिरवाहिमण्डना
 थपाद॥ दक्षस्कन्धे॥ त्रिशूलेनभिदिभिदि॥ त्रि
 भूतनाथपाद॥ दिदिदिदि॥ सुकुशनाथपाद॥
 दक्षस्कन्धौ॥ खड्गेनतादयतादय॥ खड्गनाथपा
 द॥ दक्षमणिवन्धे॥ देदयदेदय॥ पासनाथपा
 द॥ दक्षकरतले॥ एवंस्थूलंन्याशःद्वितीये॥ ल
 लातादिवा मक्रमेन॥ खैरालारे॥ जिनैत्रे॥ हुं
 लो॥ हांश्रोत्रे॥ खैरस्कन्धे॥ शौंवाहौ॥ कौंकरकु
 लिसु॥ नमःपार्श्वे॥ प्रत्यङ्गिरेउत्तरे॥ महारावेज
 घायां॥ महाशंखपावौ॥ विविधानेपादाकुलौ॥
 हदुमदुदक्षपादाकुलौ॥ मेवाशिनीपादयो॥ महा

कारीजंघायांकप्रणजिउरै॥ विवित्र्यादिपार्श्वे॥
 अन्धिहन्धिकाराकुलौ॥ ग्राहन्धीकरो॥ स्वयंहन्धी
 बाहौ॥ यौहिभौरिकन्धे॥ मणोरवकर्मणिक्कोट॥
 ताहिप्रत्यङ्गिरे॥ मुखगले॥ निवजुसर्जनेत्रे॥ खैर
 परवशे॥ हांवयां॥ हुंआधारे॥ हांस्वाधिस्थाने॥
 खैरमणिपूरके॥ शौंअनाहने॥ कौंविश्रुहौ॥ न
 आनास्थाने॥ मःनाशये॥ इतितीयसुक्ष्मन्यास
 ॥ अन्तरपरभेदन्याशः॥ खैरआधारे॥ फट्मुनाहने
 मुंताहणी॥ हांविन्दो॥ चंअर्द्धचन्द्र॥ उंनादे॥ जौंनिरो
 धिकार्या॥ गंघापिन्नां॥ श्वंसमनायां॥ टिकलकुले॥
 स्फुटमनानामन्या॥ श्रीउत्पन्नां॥ स्फुटसाभ्रवा
 ने॥ उंहादशाक्षे॥ फट्स्वस्मान्धे॥ वीपरने॥ फ

[illegible]

ऐं ह्रीं श्रीं त्वे चरीनाथ चामुण्डा अम्बा पादुकां ॥ मर
 भंयां ॥ ऐं ह्रीं श्रीं संधायुगे श्वरीनाथ महा लक्ष्मी
 अम्बा पादुकां ॥ वसायां ॥ इति त्वगाष्टाव्यांशः ॥
 ॐ जुं सः अजीतनाथपाद ॥ मध्यपादे ॥ ॐ जुं सः इ
 दानाथपाद ॥ दक्षजैघे ॥ ॐ जुं सः इश्वरी अम्बा पा
 द ॥ कामजंघायां ॥ ॐ जुं सः उदयनाथपाद ॥ दक्षमे
 रौ ॥ ॐ जुं सः उद्भगानीली अम्बापाद ॥ वामोत्ते ॥
 ॐ जुं सः अविमानाथपाद ॥ दक्षिणपार्श्वे ॥ ॐ जुं सः
 अति अम्बापाद ॥ वामपार्श्वे ॥ ॐ जुं सः ललपदेवना
 थपाद ॥ दक्षकरे ॥ ॐ जुं सः ललून्मद अम्बापाद ॥ वा
 मकरे ॥ ॐ जुं सः एंकोगेनाथपाद ॥ दक्षवाहौ ॥ ॐ जुं
 सः सरावती अम्बापाद ॥ वामवाहौ ॥ ॐ जुं सः श्यो

घनानन्दनाथपाद॥ दक्षस्कन्धे॥ ॐ गुँसः श्रे
करालि श्रमपाद॥ वामस्कन्धे॥ ॐ गुँसः शुभ्रमु
रनाथपाद॥ ककुदि॥ ॐ गुँसः शुक्रशातु श्रमपा
द॥ हृदि॥ इति यामलाष्टकन्यासः॥ इति सो ध्यात्वा
सप्तमाष्टकः॥ ॐ नमः शिवाय॥ ॐ अस्य श्री शि
वकवचस्य वामदेवमधिगायत्री छन्दः उमा मे हे
श्वरे देवता ॐ वीजं ह्रीं शक्तिः नमः कैलाशैः
ममः चतुर्विधाः पुद्गलार्थ सिद्धार्थ जपे विनियोग
॥ ॐ ह्रीं ह्रीं शिवाय श्रुगुलाभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं
हराय तज्जनीभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं मे हे स्वायम्भ
व्ये माभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं भूर्पासये श्रुनामि
काभ्यां नमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं त्रिलोत्राय कनिष्ठिकाभ्यां

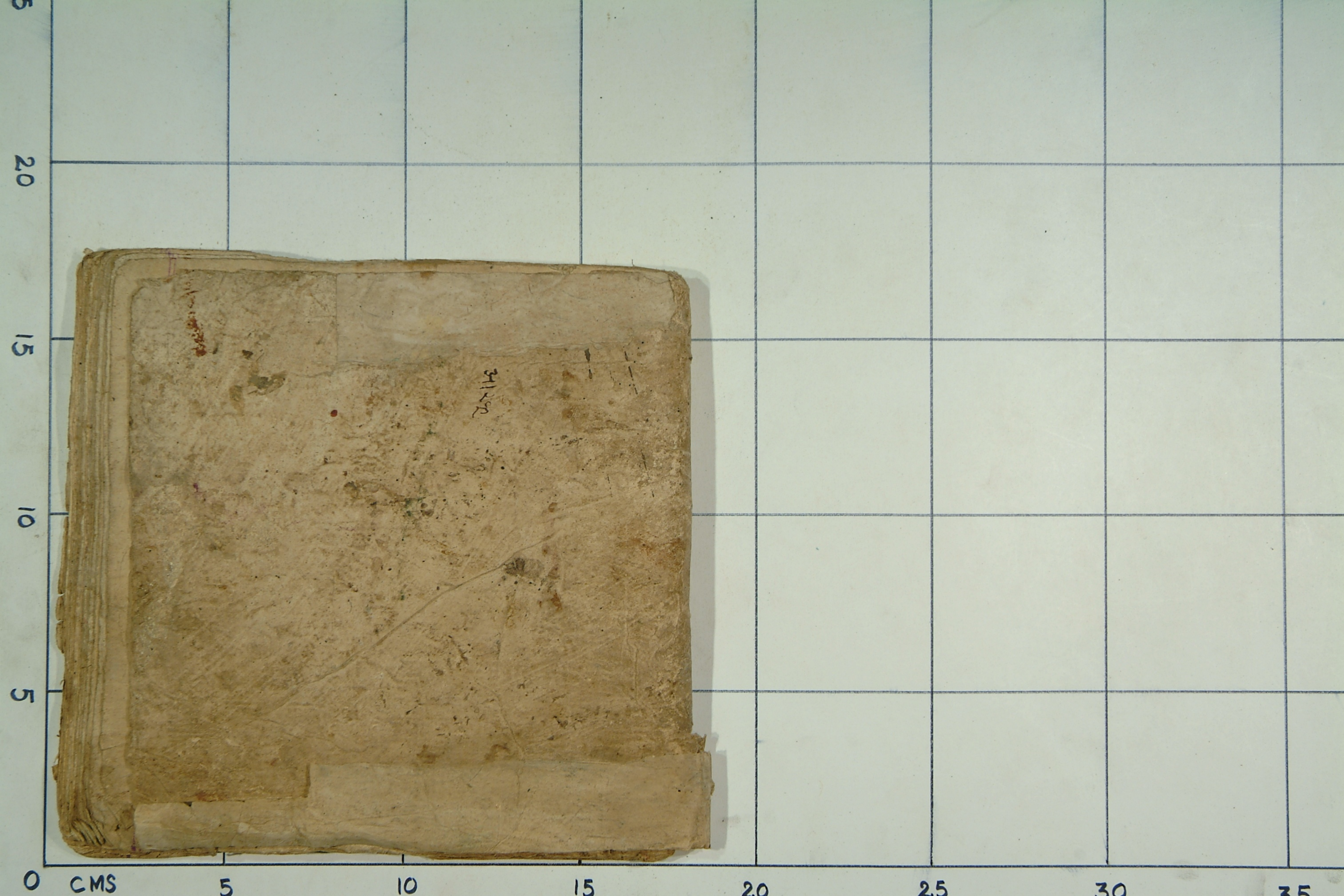
नमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं त्रिपुराङ्गकायकरतरा पृष्ठाभ्यां
नमः॥ ॥ ये वै हृदयादि साशः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं शिवाय ह
ृदयाय नमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं हृदयशिरोनेमः॥ ॐ ह्रीं ह्रीं
मे हे श्वराय शिवाय वीर्यद॥ ॐ ह्रीं ह्रीं भूलापान
यकवचाय ह्रीं॥ ॐ ह्रीं ह्रीं त्रिलोत्राय नेत्रत्रयाय
वसत॥ ॐ ह्रीं ह्रीं त्रिपुराङ्गकायश्रुत्राय फट्॥ ॥
॥ अथ ध्याने॥ वंधुकाकांचननिभा हृदिः क्षमा
ला॥ पाशाङ्कुशोच्चरदाभयवाहुदण्डैः॥ विभ्रा
णमिन्दुसकलाभरणं त्रिलोत्रं॥ मध्वाम्बिकेशमणि
वपुराश्रयामि॥ कैलाशशिखराह्वं गिरिशं पार्वती
श्वरं॥ उवाच॥ रहस्यमध्यतश्च विधितमाणां देव
देवमहादेवं भक्तानामभयप्रदं॥ प्रसादाख्यं महा

मन्त्रं कवचं हृशकर ॥ श्रीशिव उवाच ॥ लक्ष्मी
 रसहृष्टाणि वारितासि पुनः पुनः ॥ त्रीसु भावान्महा
 देवी नमस्तु परिपुष्टि ॥ अस्म्यश्रीप्रसादाद्यं म
 हा मन्त्रस्य भैरवमधि ॥ गायत्री छन्दः मन्त्रमय कवच
 पाठे विनियोगः ॥ हकार पातु सर्वाङ्गं पायादोकारमेव च
 ॥ विन्दु पातु करं देव प्रसादाद्यामहा मुनी ॥ शिवोदत्तो
 नमस्तु वैराग्यः पातु मे मुख्यं ॥ पायात्संपुष्टि तो मे त्रा
 यद्वर्णः पातु मे गुरुं ॥ मायावन्दे वचादोः शिवोदत्त भ
 वेद्विदो ॥ समस्तैराक्षरं पातु नाभि वदुक भैरव ॥
 श्रीगीतकण्ठभाभार्यं भजे द्वितितथा वदु ॥ पायात्तस्य
 तथा चाष्टमर्दनारि श्वरेः सदा ॥ गग्निसंवर्तकादित्य
 तनौ सखं च विन्दुवत् ॥ चिन्तामणि महामन्त्रो रक्षां क

रेतु सर्वदा ॥ श्रुतिर्हि मो भगवते दाक्षिणा मूर्तये तथा
 ॥ मन्त्रं मध्यं प्रभृक्षेति स्वाहा तं पातु मे सदा ॥ वामा
 दिदक्षिणा मूर्तिरुसादि पातु मे कति ॥ वकारावन्धि
 संयुक्ते सुयोदशश्च एनित ॥ विन्दु र्द्वयुतो मे त्रौ अ
 ष्पं च शिखिः पुनः ॥ त्रिपुरास्रयुतो विन्दु द्वित्रि
 नसमचितः ॥ मन्त्रो विषहृष्टः पातुः कालकूटविषा
 दपि ॥ वेदायाद्या प्रशाददश्च नमो देवे न शिवस्य पि
 ॥ पातु मादिस्कभीतिभ्यः राजपीतिभ्येव च ॥
 विदो मायादक्षिणेति नमो तं पातु मे शिखां ॥ शि
 खं वीजमदनस्थं शंकरं वरनियो नयत् ॥ ध्यातौ क
 निरता गाय नमो रुद्राय संभवे ॥ श्रुतिर्मायां तदो
 मन्त्रः सर्वाभिष्ट प्रदायक ॥ शिवं चन्द्रो चन्द्र विन्दुः

ॐ या उगुलो ॥ ॥ या हं प्रस की हरा ता हं लिखि
 ते मया ॥ यदि भुङ्गं म भुङ्गं म म दोषो न दीयते
 ॥ वर्ष ६९ या उमे र स वो या गुलो ॥ ॥ ॥ ॥

माद प्रभास	दीपया	पुदासया	सर्वचल
मले	मले	हल	दोहल
प्रीयं	पिपि	विहल	नीक्या
श्रीवाड	श्रु	आम्य	वदाम
करप	हल	मले	दाष
गुलासि	विहल	पिपि	पेला
ममेहा	आम्य	श्रु	कारिया
	रावी	रावी	मले
	जिफे	लुकमेल	पिपि
	भुकमेल	दालकीनी	श्रु
	आतोला	गवस्य	सिपि
		सिपि	आतो
		आतो ४	



341292